डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड.
एम्.ए.पीएच्.डी.
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
सातारा - 415002 (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर अध्यापक,
हिन्दी शोध निर्देशक,
सदस्य,
शिवाजी विश्वविद्यालय हिन्दी
प्राध्यापक परिषद.

-: प्रमाणपत्र :-

मैं डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड, हिन्दी विभागाध्यक्ष, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सातारा, यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री महादेव दगडू माने ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध, ' शैलेश मटियानी के उपन्यासो में निम्नवर्ग का चित्रण ' मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। श्री महादेव दगडू माने के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ठ हूँ। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है। मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाय।

सातारा.
दिनांक : 30 नवम्बर, 1990.

निर्देशक,
(डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड)

-: प्रख्यापन :-

शैलेश मटियानी के उपन्यासों में निम्नवर्ग का चित्रण

यह लघु-शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिन्दी) के लघु-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय में उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई हैं।

सातारा.　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　शोध छात्र

दिनांक : 30 नवम्बर, 1990.　　　　　　　　　　　　　　(श्री. महादेव दगडू माने.)

-: प्राक्कथन :-

एम्. फिल की पढाई करते समय लघु-शोध प्रबंध के बारे में जब पहल चली तब विषय चुनाव के बारे में अनेक विषय मेरे सामने आए। मेरा बचपन एवं छात्र जीवन दौडधूप में गुजरा और आज भी वही स्थिति है। पिताजी के असमय देहवसान के कारण परिवार की सारी जिम्मेदारी मुझपर आ पडी। सातारा से करीब तीन मिल की दूरी पर 'क्षेत्रमाहुली' मेरी जन्मभूमि है। जहाँ से मैं कॉलेज के दिनों में पैदल या बायसिकल पर आता रहा। इसके बीच संगममाहुली हैं जहाँ मैंने मनुष्य जीवन का आखरी सफर बहुत बार देखा। अपने आप्तजन के मृतक संस्कार के लिए आए हुए लोगों का करूण क्रंदन और खास कर निम्नवर्गीय व्यक्ति के चेहरे की अर्थाभाव से उत्पन्न निराशा को मैं अपनी आँखों से देख चूका हूँ। यह सब मुझे संस्पर्श करता रहा। सातारा-क्षेत्रमाहुली के बीच समाज के विभिन्न व्यक्तियों के दुःख दर्द मैं देखता रहा। मेरे निजी अनुभव भी आर्थिक अभावात्मकता के कारण बहुत हाल-अपेष्टाओं से भरे हुए हैं। आर्थिक अभावात्मक स्थिति के कारण मनुष्य की होनेवाली दुरावस्था तथा दौडधूप मैं देखता रहा-अनुभव करता रहा।

इसी बीच मराठी में बहुचर्चित 'दलित-साहित्य-आन्दोलन' ने मुझे आन्दोलित कर दिया। इस आन्दोलन में कार्यरत लेखक जो सातारा की भूमि में जन्मे हैं उनका भी कुछ सम्पर्क हुआ, जिनके साहित्य ने सभी वर्गों के लोगों को विचार करने पर विवश कर दिया। इर्द-गीर्द का जीवन और साहित्यकारों ने चित्रित किया हुआ जीवन इसकी सही तलाश मुझे दलित साहित्य में दिखाई दी। फिर प्रश्न यह निर्माण हुआ की क्या हिन्दी साहित्य में यह दलित साहित्य नही है ? बचपन से ही मेरी रूचि उपन्यास की ओर रही हैं अतः इन्हें दिनों मटियानीजी का 'बोरीवली से बोरीबंदर तक' उपन्यास पढ़ने में आया, जिसमें बम्बई महानगरी के फूटपाथी जीवन का वास्तविक चित्रण दिखाई दिया। मराठी भाषिक होने के कारण यह उपन्यास मुझे, मेरे अपने परिवेश के अत्यंत निकट महसूस हुआ, मुझे इस उपन्यास ने आकर्षित किया, केवल आकर्षित ही नही किया, तो प्रभावित भी किया। अतः मटियानीजी के 'कबुतरखाना', 'चौथी मुठ्ठी', और 'किस्सा नर्मदाबेन गंगुबाई' आदि उपन्यास मैंने पढ़े। इसमें मुझे सर्वहारा, निम्नवर्ग का दैन्य, दुःख, निराशा, विवशता एवं लाचारी का वास्तविक चित्रण दृष्टिगत हुआ। फिर मैने मन ही मन विचार कर लिया कि क्यों न मटियानीजी के उपन्यास साहित्य पर उपर्युक्त दृष्टि से प्रकाश डाला जाय ? समीक्षकों ने आंचलिक उपन्यासकार के रूप में मटियानी पर चर्चा की है। मगर उनके उपन्यास का उपर्युक्त पहेलू उपेक्षित रह गया है।

विषय चुनाव के इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए मैं डा. सुरेश गायकवाड एवं डा. गजानन सुर्वेजी के

साथ चर्चा करता रहा। उनके सत्परामर्श के बाद ही यह विषय निश्चित हुआ। इसकी रूपरेषा बनाकर मैं काम में जुट गया। अध्ययन के उपरान्त मैंने अपनी क्षमता और सीमित बुद्धी के आधार पर गटियानीर्जी के उपन्यासो में चित्रित निम्नवर्ग के वास्तविक जीवन को सफलता पूर्वक प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यह प्रयास कितना सफल हुआ है यह आप जैसे समीक्षकों के उचित निर्णय पर ही निर्भर है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध का अध्ययन मैंने श्रद्धेदय गुरूवर डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाडजी के सफल निर्देशन में किया है। अपने प्रभारी प्राचार्य के कार्य में व्यक्त, माताजी की मृत्यु से दुःखी होने के बावजूद भी उन्होंने मुझे हरसमय बड़ी तत्परता, तन्मयता एवं आत्मियता से मौलिक सुझाव एवं मार्गदर्शन किया है। साथ ही श्रद्धेय डा. गजानन सुर्वेजी के समय-समय पर दिए गए मौलिक सुझावों एवं उनके समृद्ध वैयक्तिक ग्रंथालय से भी मैं लाभान्वित हो चुका हूँ। अतः मैं उन दोनों का हृदय से ऋणि हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य में मुझे आदरणीय प्रा. डॉ. व्ही.के.मोरे, प्रा. बी.बी.सावंत, प्रा. चिटणीस, ग्रंथपाल पाटील, प्रा. टी.आर्.पाटील., लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज, सातारा., प्राचार्य, ग्रंथपाल सुरेश नाईकजी, राजे रामराव महाविद्यालय, जत, डा. रामजी तिवारी, ग्रंथपाल, जयकर ग्रंथालय, पूना विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र राष्ट्र भाषा सभा पुणे, ग्रंथपाल शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, डा. र.ग. देसाई, सांगली, मित्रवर्ग प्रा. राम पाटील एवं अनिल यादव से विशेष साहाय्यता मिली है। अंत में, आज मैं जो कुछ भी हूँ उसकी एकमात्र अधिकारिणी मेरी ईश्वरतुल्य माता श्रीमती काशीबाई (ताई) के आशीर्वाद से ही यह शोध कार्य संपन्न हो सका। इस शोध कार्य में मेरी सहधर्मिणी सौ. माधवी का सहयोग तथा परिवार के सभी सदस्यों एवं दोस्तों की प्रेरणा एवं सहाय्यता लगातार मिलती रही परन्तु उनका आभार मानना औपचारिकता ही होगी।

मैं इस कार्य में सौ. शोभना खिरे., क्वालिटी साइक्लोस्टायलिंग, सातारा., का कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस लघु-शोध प्रबंध के टंकलेखन कार्य को लिया और समय में टंकलिखित किया।

क्षेत्रगाहुली, सातारा

दिनांक : 30 नवम्बर, 1990.

(श्री. महादेव दगडू माने.)

एम्.ए.बीएड.